BSKE-141

बी.ए. कार्यक्रम

(बी.ए.जी.)

सत्रीय कार्य (पंचम छमाही)

जुलाई, 2021 एवं जनवरी, 2022 सत्रों के लिए

BSKE – 141 आयुर्वेद के मूल आधार

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

बी.ए. (कार्यक्रम) संस्कृत ऐच्छिक पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य (2021–22)

पाठ्यक्रम कोड : **BAG/BSKE-141/2021 - 22**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है ।

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

दिनाँक : ....

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2021 सत्र के लिए : 31 मार्च 2022

जनवरी 2022 सत्र के लिए : 30 सितम्बर 2022

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य : BSKE- 141 आयुर्वेद के मूल आधार

पाठ्यक्रम कोड – **BSKE 141**
पाठ्यक्रम शीर्षक – आयुर्वेद के मूल आधार
सत्रीय कार्य – **BSKE – 141 /TMA/2021-2022**

पूर्णांक – 100
नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

(क) निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. आयुर्वेद का अभिप्राय तथ प्रमुख आचार्यो का वर्णन कीजिए ।
2. चिकित्सा के मूल सिद्धान्तों को लिखिए ।
3. ग्रीष्म ऋतु के अनुसार पथ्य और अपथ्य लिखिए ।
4. उपनिषद् अभिप्राय व प्रमुख उपनिषदों का वर्णन कीजिए ।

15X4=60

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न :–

6X5=30

5 आयुर्वेद में स्वास्थय के मूलभूत सिद्धान्त लिखिए ।

6. स्वस्थ दिनचर्या के लिए क्या आहार विहार है स्पष्ट कीजिए ।

7 तैत्तिरीय उपनिषद् पर टिप्पणी लिखिए ।

8 शरदऋतु के अनुसार पथ्य और अपथ्य का वर्णन कीजिए ।

9 चरक सहिंता (सूत्र स्थानम्) का परिचय दीजिए ।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : **1 X 10=10**

ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए –

अन्नं न निन्द्यात्, तद्व्रतम्। प्राणों वा अन्नम्। शरीरमन्नादम्। प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम्। शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्र ह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

अथवा

भृगुवै वारुणि:, वरूणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तस्मा एतत्प्रोवाच। अन्नं प्राणं चक्षुः क्षोत्रं मनो वाचमिति। तं होवाच। यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्भिसंविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व। तद् ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।